सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 36 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 8 मार्च, 2022
मूल्य ₹ 3/-

हमेशा ध्यान में रखिये की आपका सफल होने का संकल्प किसी भी और संकल्प से महत्वपूर्ण है.
-अब्राहम लिंकन

प्रियंका के नेतृत्व में... 8 | अखिलेश और प्रियंका ने ताबड़तोड़... 3 | कानपुर: डीसीएम से टकराई कार... 7

क्या सट्टा बाजार है एग्जिट पोल के पीछे

- सट्टा बाजार में यूपी में दोबारा भाजपा सरकार बनने पर लग रहा दांव
- पहले नंबर पर भाजपा तो दूसरे पर सपा पर लग रहा सट्टा
- अधिकांश सर्वे एजेंसियां भाजपा को बहुमत मिलने का लगा रहीं अनुमान
- विपक्ष ने खारिज किया एग्जिट पोल के अनुमानों को

पहले भी गलत साबित होते रहे हैं एग्जिट पोल, हजारों करोड़ कमा लिए सट्टा बाजार ने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधान सभा चुनाव के नतीजे क्या होंगे इसका पता तो दस मार्च को मतगणना के बाद ही चलेगा लेकिन एग्जिट पोल से सट्टा बाजार में बहार आ गयी है। एग्जिट पोल में यूपी में भाजपा सरकार के दोबारा बनने के आसार से सट्टा बाजार में हजारों करोड़ों के वारे-न्यारे हो गए हैं। सट्टा बाजार में भाजपा पहले और सपा दूसरे नंबर पर चल रही है। सूत्रों का कहना है कि इस एग्जिट पोल के पीछे सट्टा बाजार का खेल काम कर रहा है अगर नतीजे ऐसे नहीं आए तो इसकी पुष्टि हो जाएगी कि कुछ लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए इस तरह के एग्जिट पोल कराए गए। वहीं विपक्ष ने एग्जिट पोल के नतीजों को सिरे से खारिज कर दिया है।

एग्जिट पोल को लेकर हमेशा से सवाल उठते रहे हैं। कई बार एग्जिट पोल पूरी तरह असली नतीजों के सामने धराशायी हो चुके हैं। मसलन, पश्चिम बंगाल विधान सभा चुनाव के दौरान अधिकांश एग्जिट पोल में भाजपा को जीतता बताया गया था लेकिन ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने 292 में से 213 विधान सभा सीटों पर जीत दर्ज की और भाजपा को 77 सीटें मिली थीं।

इसी तरह दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों में भी तमाम एग्जिट पोल फेल हो चुके हैं। ऐसे में यूपी विधान सभा चुनाव में एग्जिट पोल की बाजीगरी से इस बात की आशंका को बल मिल रहा है कि इसके पीछे सट्टा बाजार काम कर रहा है। अलग-अलग सटोरियों ने अपने आंकलन के अनुरूप प्रमुख दलों की सीटों का ग्राफ तय किया है। इनमें भाजपा सबसे आगे है और सपा दूसरे नंबर पर है। कौन दल सरकार बनायेगा, इसे लेकर एक मुश्त रकम के सीधे दांव लगवाए जा रहे, जिनके भाव अलग-अलग हैं। इसके पहले सातवें चरण के मतदान के बाद सटोरियों ने भाजपा को 226 से 229 सीटें दी हैं और इसके अनुरूप भाजपा पर दांव लगाने वालों को 10 हजार के बदले 13 हजार रुपये मिलेंगे। वहीं सपा को 133 से 136 सीटें दी गईं और इसके अनुरूप सपा पर दांव लगाने वालों को 3200 रुपये के बदले 10 हजार रुपये की वापसी होगी। गौरतलब है कि अधिकांश सर्वे एजेंसियां भाजपा को बहुमत मिलने का अनुमान जता रही हैं।

एग्जिट पोल के कुछ अनुमान

इंडिया टुडे-एक्सिस माई इंडिया के एग्जिट पोल में भाजपा गठबंधन प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बना रही है। भाजपा को 288 से 326 सीटें मिलने का अनुमान है जबकि सपा गठबंधन को 71 से 101 सीटें मिलने का अनुमान है। न्यूज 24 और टुडेज चाणक्या का एग्जिट पोल भी सामने आया है। इसमें भाजपा गठबंधन को 294, सपा गठबंधन को 105, बीएसपी को 2, कांग्रेस को एक और अन्य को एक सीटें मिलती दिख रही हैं।

एग्जिट पोल में ही सपा और अखिलेश यादव के दावों और साइकिल की हवा निकल गई है, मतलब यूपी की जनता 10 मार्च को सपा को समाप्त वादी पार्टी बना रही है।

केशव प्रसाद मौर्य, उपमुख्यमंत्री

एग्जिट पोल्स द्वारा दिखाई जा रही तस्वीर आभासी, भ्रामक और अविश्वसनीय है। जनता इसके पीछे की मंशा को बहुत अच्छे से समझ रही है। समाजवादी गठबंधन पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने जा रहा है। प्रत्याशी व कार्यकर्ता मतगणना तक सतर्क व सक्रिय रहें। निश्चय ही सफलता आपकी राह देख रही है।

शिवपाल सिंह यादव, प्रसपा प्रमुख

एग्जिट पोल्स मोनिटर्ड हैं। समाजवादी गठबंधन 300 से अधिक सीटें जीत रहा है। उम्मीदवार और कार्यकर्ता सावधानी पूर्वक मतगणना कराएं और 10 मार्च को विजय पताका फहराने की तैयारी करें।

रामगोपाल यादव, वरिष्ठ नेता, सपा

उत्तर प्रदेश की जनता का जनादेश, सपा+सुभासपा गठबंधन आ रहा है। टेलीविजन पर ध्यान न दें। जब तक गिनवाई नहीं तब तक ढिलाई नहीं। ईवीएम मशीन पर रहे ध्यान।

ओपी राजभर, अध्यक्ष, सुभासपा

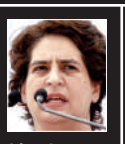

हमारे उम्मीदवारों ने लंबे समय के बाद 400 सीटों पर चुनाव लड़ा है। देखेंगे नतीजे क्या आएंगे, लेकिन कांग्रेस ने बहुत मेहनत की है। इन बातों के बारे में तब तक कुछ नहीं कहा जा सकता जब तक नतीजे नहीं आ जाते।

प्रियंका गांधी, कांग्रेस महासचिव

एग्जिट पोल से नतीजे अलग होंगे। गठबंधन की सरकार बनेगी। यूपी में डर का माहौल है, जो किसी मतदाता की पसंद के बारे में पूछे जाने पर उसके जवाब को प्रभावित कर सकता है। अगर किसी ने हमें (सपा-रालोद) वोट दिया है तो वह डर के मारे भाजपा कह सकता है।

जयंत चौधरी, अध्यक्ष, रालोद

एग्जिट पोल और परिणामों में अक्सर भारी अंतर देखा जाता है, एग्जिट पोल के नतीजे तमाम तरीकों से प्रभावित किये जा सकते हैं। आने वाले परिणामों का इंतजार किया जाना चाहिए। जनता ने निश्चित तौर पर बदलाव की दिशा में वोट किया है।

वैभव माहेश्वरी, प्रवक्ता, आप

यूक्रेन से छात्रों का रेस्क्यू करने में असफल रही सरकार : अखिलेश

» दावा किया कि सपा गठबंधन को 300 सीटें मिलनी तय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का मतदान आने से पहले समाजवादी पार्टी के सुप्रीमो अखिलेश यादव ने बीजेपी पर निशाना साधा है। उन्होंने रूस-यूक्रेन में जारी युद्ध के दौरान भारत सरकार द्वारा भारतीयों की निकासी को लेकर कहा कि वाराणसी में चुनाव की वजह से ऑपरेशन गंगा नाम दिया गया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ना जाने कौन से अंतरराष्ट्रीय पहचान का दावा करती है। केंद्र सरकार यूक्रेन से भारतीयों का रेस्क्यू करने में असफल रही है। अगर उन्होंने भारतीयों को सीधे यूक्रेन से रेस्क्यू किया होता तो मैं इसकी तारीफ करता। साथ ही अखिलेश ने कहा जनता इस बार डबल इंजन की सरकार की पटरियों को उखाड़ने के लिए तैयार है। लगभग 300 सीटें सपा गठबंधन जीतेगा। उन्होंने कहा दस मार्च को सारे एग्जिट पोल गलत साबित होंगे बंगाल की तरह।

बता दें कि तमाम एग्जिट पोल के मुताबिक, सूबे में फिर से भाजपा की सरकार बन सकती है। सर्वे रिपोर्ट आने के बाद से राजनीतिक दलों की बेचैनी बढ़ गई है। तमाम आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी जारी है। वहीं समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने बड़ा दावा किया है। अखिलेश ने कहा सपा गठबंधन को 300 सीटें मिलनी तय है। अखिलेश ने एक अन्य ट्वीट में कहा सातवें और निर्णायक चरण में सपा-गठबंधन की जीत को बहुमत से बहुत आगे ले जाने के लिए सभी मतदाताओं और विशेषकर युवाओं का बहुत-बहुत आभार। हम सरकार बना रहे हैं। उन्होंने कहा उनकी पार्टी के नेतृत्व वाला गठबंधन उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में विजय हासिल करेगा। पूर्व मुख्यमंत्री ने दावा किया कि समाजवादी पार्टी की अगुआई वाले गठबंधन के प्रत्याशियों की जीत से जनता के अधिकारों, अवसरों और सम्मान की रक्षा की गारंटी होगी। अखिलेश ने कहा मतदान में समाजवादी पार्टी और गठबंधन के पक्ष में जनता ने तीन सौ सीटों पर विजय की मुहर लगा दी है। उन्होंने कहा कि शुरू से ही जनता ने समाजवादी पार्टी को ही मजबूत और भरोसे लायक विकल्प मान लिया है।

भाजपा राज में समाज के सभी वर्गों को परेशान किया गया

उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा राज में जिस तरह समाज के सभी वर्गों को परेशान किया गया, वह भुलाया नहीं जा सकता है। सपा प्रमुख ने कहा कि महंगाई और बेरोजगारी ने लोगों की कमर तोड़ दी है, जिससे जनता में भाजपा के प्रति गहरी नाराजगी है। यादव के मुताबिक पांच साल से कराह रही जनता के साथ हुए अन्याय और अपमान की घटनाओं के खिलाफ समाजवादी पार्टी पूरी मजबूती से डटी रही। उन्होंने कहा कि समतामूलक समाज की स्थापना के साथ प्रदेश में समृद्धि और खुशहाली के लिए कार्य करना ही समाजवादी पार्टी की रीति-नीति है।

एग्जिट पोल जनता के मनोरंजन का एक माध्यम : पंखुड़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नोएडा। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के सभी चरणों के लिए मतदान की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अब चुनावी नतीजे दस मार्च को आएंगे लेकिन इससे पहले सात मार्च को आए एग्जिट पोल को लेकर गौतमबुद्ध नगर की तीनों सीटों पर चुनाव लड़े प्रत्याशियों ने अपनी प्रतिक्रिया दी है।

इसी कड़ी में कांग्रेस प्रत्याशी पंखुड़ी पाठक ने कहा कि एग्जिट पोल जनता के मनोरंजन का एक माध्यम है। यह 10 मार्च को साफ होगा कि जनता ने किसे चुना है। एग्जिट पोल की मानें तो जिले की तीनों सीटों पर भाजपा का पलड़ा भारी बताया जा रहा है। हालांकि दादरी और जेवर में सपा-रालोद गठबंधन प्रत्याशियों ने भाजपा को कड़ी चुनौती दी है, जिससे इन सीटों पर मुकाबला दिलचस्प माना जा रहा है। वहीं इन दोनों सीटों पर कांग्रेस प्रत्याशी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते नजर नहीं आए। बसपा प्रत्याशियों ने मुकाबले को त्रिकोणीय बनाने की भरपूर कोशिश तो की है, लेकिन एग्जिट पोल के हिसाब से उनकी मेहनत सफल होती नजर नहीं आ रही है। कमोबेश यहीं स्थिति नोएडा सीट की है।

दो दिन बाद गलत साबित होंगे एग्जिट पोल : भदौरिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी से लखनऊ में एक विधानसभा सीट से प्रत्याशी व प्रवक्ता अनुराग भदौरिया ने विधानसभा चुनाव में सपा की जीत का दावा किया है। उन्होंने कहा है कि प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनने के पहले दिन से ही पुरानी पेंशन व्यवस्था लागू कर दी जाएगी। साथ ही सपा के द्वारा किए गए सारे वादे पूरे होंगे।

उन्होंने कहा एग्जिट पोल गलत साबित होंगे, दस मार्च को सपा की सरकार बनेगी। बाबा गोरखपुर भाग जाएंगे। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान की शिक्षा व्यवस्था पूरी दुनिया में सबसे अच्छी है। लेकिन यहां सरकारी और प्राइवेट स्कूलों की फीस में असमानता है। अगर प्राइवेट स्कूल संचालक फीस कम कर दें, तो मध्यम वर्ग के बच्चे भी अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षा के गिरते स्तर पर उन्होंने चिंता व्यक्त की। शिक्षाविदों को चेताया कि अगर शिक्षा में सुधार नहीं किया तो युवा सिपाही भी नहीं बन पाएगा। उन्होंने कहा सपा की सरकार बनने पर शिक्षा प्रणाली व्यवस्था को और मजबूत किया जाएगा।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

अब पार्षदों की तकदीर भी बताएगी ईवीएम!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। दस मार्च की मतगणना को लेकर जितनी चिंता विधायक उम्मीदवारों को है, उससे अधिक नगर निगम के पार्षदों को है। हर पार्षद को चिंता है कि अगर वार्ड में उनका दल हार गया तो किस मुंह से टिकट मांगेंगे। दरअसल इसी 12 दिसंबर को पांच साल पूरा होने पर नए महापौर समेत सभी नए 110 पार्षदों को शपथ लेनी है और चुनाव नवंबर में हो सकते हैं। ऐसे में टिकट मांगने की दौड़ भी दो तीन माह में ही दिखने लगेगी। वैसे तो सभी दलों में टिकट पाने की होड़ मची रहती है लेकिन भाजपा और सपा में कुछ अधिक ही दावेदार रहते हैं। भाजपा से 58 पार्षद चुनकर आए थे। बाद में सपा समेत निर्दलीय पांच पार्षद भाजपा में शामिल हो गए थे। इस हिसाब से भाजपा 63 पार्षदों वाल दल बन गया था और महापौर के होने से सदन में उसकी मत संख्या 64 हो गई थी। इस हिसाब से प्रस्ताव पास कराना भाजपा के लिए आसान हो गया था लेकिन तीन पार्षदों की मौत से यह संख्या 60 रह गई थी।

प्रत्याशी अपने वोट की कड़ी निगरानी करें : टिकैत

» हालात बिगड़ने पर शासन-प्रशासन होगा जिम्मेदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बालियान खाप के चौधरी नरेश टिकैत ने कहा कि दस मार्च को सभी को अपनी वोट की निगरानी करनी है। यह देखना है कि जिसको वोट दी थी, उसे मिली है या नहीं। किसी भी तरह की धांधलेबाजी से हालात बिगड़ते हैं, तो इसके लिए शासन-प्रशासन जिम्मेदार होगा। मतगणना पूरी निष्पक्षता से होनी चाहिए।

नरेश टिकैत ने कहा पंचायत चुनाव में भाजपा का सत्ता का दुरुपयोग पूरी दुनिया ने देखा था। चुनाव की मतगणना के दिन भी धांधलेबाजी हो सकती है। पंचायत चुनाव में जनता खामोश थी, लेकिन अब ऐसा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने आह्वान किया कि मतगणना के दिन सभी लोग एकजुट रहें। कानून के दायरे में रहकर धांधलेबाजी का पुरजोर विरोध करें। उन्होंने कहा कि विजय जुलूस से भी परहेज करें। धारा 144 को लेकर नरेश टिकैत ने कहा कि प्रशासन धारा 288 भी लागू कर दे तो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। किसान ट्रैक्टर पर अपनी वोट की निगरानी के लिए आएंगे। हमारा मकसद शांति व्यवस्था को खराब करना नहीं है, लेकिन लोग एकजुट होंगे तो प्रशासन पर दबाव रहेगा कि वह निष्पक्ष मतगणना कराएगा।

राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस की सीटें घटना तय

» 13 सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव 31 मार्च को होंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यसभा की 13 सीटों के लिए चुनाव 31 मार्च को होंगे। यह 13 सीटें 6 राज्यों से हैं, जिसमें पंजाब में पांच , केरल में तीन, असम में दो और हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा और नागालैंड में एक-एक सीटें शामिल हैं। चुनाव आयोग द्वारा जारी की गई लिस्ट में, रिटायर होने वाले सदस्यों में असम से रानी नारा और रिपुन बोरा, हिमाचल प्रदेश से आनंद शर्मा, केरल से एके एंटनी, एमवी श्रेयम्स कुमार और सोमप्रसाद के, नागालैंड से केजी केने, त्रिपुरा से झरना दास (बैद्य), पंजाब से सुखदेव सिंह, प्रताप सिंह बाजवा, श्वेत मलिक, नरेश गुजराल और शमशेर सिंह दुल्लो शामिल हैं।

बता दें कि राज्यसभा की 13 सीटों के लिए इस महीने होने जा रहे द्विवार्षिक चुनाव कांग्रेस के लिए बेहद कठिन नजर आ रहे हैं। राज्यों में पार्टी की कमजोर हुई स्थिति के चलते उच्च सदन में कांग्रेस की सीटों का आंकड़ा और घटना तय है और मौजूदा परिस्थितियों में पार्टी के लिए राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता आनंद शर्मा को भी सदन में दुबारा भेजना मुश्किल है।

पूर्व रक्षामंत्री एके एंटनी को जरूर केरल से दुबारा वापस लाने की पार्टी के पास गुंजाइश है। एक्जिट पोल अनुमान सही रहे तो राज्यसभा के इस चुनाव में कांग्रेस को सबसे बड़ा धक्का पंजाब से लगेगा, जहां एक सीट हासिल करना भी कठिन हो जाएगा। पंजाब में तीनों सीटों के चुनाव एक साथ और दो सीटों के एक साथ होंगे। तीन सीटों के चुनाव में एक्जिट पोल के अनुमानों के हिसाब से शायद कांग्रेस को एक सीट मिल जाए। मगर दो सीटों के अलग चुनाव में उसके खाते में कोई सीट नहीं आएगी। जबकि इन पांच सीटों में कांग्रेस के पास इस समय दो सीटें प्रताप बाजवा और शमशेर की हैं और दोनों रिटायर हो रहे हैं। हिमाचल कीआनंद शर्मा के रिटायर होने से खाली हो रही है, इस बार कांग्रेस के हाथ से निकल कर सत्ताधारी भाजपा के पास चली जाएगी।

अखिलेश और प्रियंका ने ताबड़तोड़ रैलियों का जड़ा शतक

बसपा प्रमुख मायावती ने कीं मंडलवार रैलियां

दोबारा सत्ता के लिए योगी ने लगाया रैलियों का दोहरा शतक

दिव्यभान श्रीवास्तव

लखनऊ। चुनावी चक्रव्यूह के सातवें द्वार पर निर्णायक वोटिंग हुई। अंतिम चरण का प्रचार खत्म होने तक सभी दलों ने अपनी पूरी ताकत चुनावी रण में झोंकी। मैदान मारने के लिए एक-एक दिन में कई-कई रैलियां व सभाएं की गईं। रथ यात्राएं निकाली गईं। नुक्कड़ सभाओं से भी वोटरों की नब्ज पर हाथ रखने की कोशिश हुई। यदि पूरे चुनाव की बात करें तो सीएम योगी आदित्यनाथ ने रैलियों, सभाओं का दोहरा शतक जड़ा।

सपा प्रमुख अखिलेश यादव और कांग्रेस की यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी ने भी ताबड़तोड़ रैलियों का शतक जड़ा। वहीं बसपा प्रमुख मायावती ने मंडलवार रैलियां कीं। इस चुनाव में भाजपा ने तगड़ा प्रचार किया। लंबी चौड़ी टीम चुनावी रण में उतारी। सीएम योगी ने मजबूती से प्रचार किया और आखिरी चरण तक हाथ आजमाए। आचार संहिता लागू होने के बाद से आखिरी चरण का प्रचार खत्म होने तक उन्होंने 200 से ज्यादा रैलियां, रोड शो किए। प्रचार के आखिरी दिन पांच मार्च को उन्होंने पांच स्थानों पर चुनावी कार्यक्रम किए। एक-एक दिन में सात-सात सभाएं कर उन्होंने मजबूती से वोटरों के सामने अपनी बात रखी। यूपी के अलावा योगी ने उत्तराखंड में भी रैलियां कीं।

पीएम मोदी ने की 27 रैलियां

प्रधानमंत्री मोदी ने भी यूपी के चुनाव को बेहद गंभीरता से लिया। उन्होंने 27 रैलियां और रोड शो किए। वहीं गृहमंत्री अमित शाह 61 रैलियों व रोड शो में शामिल हुए। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 41 सभाएं कीं। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भी रैलियों का शतक लगाया। प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव ने 80 और उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने 40 से अधिक सभाएं कीं।

सपा प्रमुख का जोरदार प्रचार

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने इस चुनाव में जोरदार प्रचार किया। उन्होंने 117 जनसभाएं कीं। 14 रथ यात्राएं कीं। इनमें से कई आयोजन सहयोगी दलों के साथ हुए। इसके अलावा बड़ी संख्या में नुक्कड़ सभाएं कीं। सातवें चरण में उन्होंने पूरी ताकत झोंक दी और सर्वाधिक रैलियां कीं। 13 फरवरी के बाद तो हर दिन दो से तीन जिलों में जनसभाएं कीं। एक से पांच मार्च के बीच सर्वाधिक चार रैली गौनपुर में कीं, जबकि आजमगढ़ में दो रैलियां कीं।

कांग्रेस महासचिव के इर्द-गिर्द केंद्रित रहा कांग्रेस का प्रचार

कांग्रेस का प्रचार पूरी तरह से पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी के इर्द-गिर्द केंद्रित रहा। उन्होंने 147 रैलियां कीं। वहीं, राहुल गांधी ने पूरे चुनाव में सिर्फ दो सभाएं कीं। प्रियंका ने 42 रोड शो और डोर टू डोर कैंपेन भी किए। इसके अलावा छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट भी यूपी में सक्रिय रहे। राहुल ने अमेठी के जगदीशपुर और वाराणसी के पिंडरा क्षेत्र में सभाएं कीं। वहीं, भूपेश बघेल, सचिन पायलट और दीपेंद्र हुड्डा ने पश्चिमी यूपी में जनसंपर्क पर फोकस किया।

मायावती जयंत ने की 18-18 रैलियां

बसपा सुप्रीमो मायावती ने 18 जिलों में मंडलवार रैलियां कीं। उन्होंने पंजाब व उत्तराखंड में भी एक-एक रैली की। बसपा के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा ने इस बार पार्टी में प्रचार की कमान संभाली। उन्होंने सौ से ज्यादा जनसभाएं कीं। उधर, सपा के साथ गठबंधन में लड़ रहे रालोद सुप्रीमो चौधरी जयंत सिंह ने 14 जनसभाएं एवं विजय यात्रा अखिलेश यादव के साथ की। इसके अलावा अलग से 18 जनसभाएं, आशीर्वाद यात्रा व परिवर्तन रैलियां निकालीं।

राजभर ने की 137 सभाएं तकिया कलाम रहा ललका सांड़

2017 विधानसभा चुनाव से चर्चाओं में आए सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर इस चुनाव में भी गठबंधन से लेकर चुनाव प्रचार तक लगातार सुर्खियों में रहें। बेबाक बोल से मतदाताओं के बीच तालियां बटोरने की महारथ इन्होंने मंचों से दिखाई। पूरे 137 जुनावी सभाएं व रैलियां की। इस बार किसानों के फसलों की बर्बादी का कारण बनें छुट्टा पशुओं के बारे में इन्होंने सीएम योगी का ललका सांड़ तकिया कलाम की तरह हर जगह बोला।

कौन भेदेगा सातवें द्वार के चक्रव्यूह को, नतीजों का इंतजार

सात चरणों का यूपी विधान सभा चुनाव संपन्न, दिग्गजों पर खास नजर

» ईवीएम में बंद हुई प्रत्याशियों की किस्मत, दस को होगी मतगणना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधान सभा चुनाव के सातवें और अंतिम चरण का मतदान संपन्न हो गया। नौ जिलों की 54 सीटों पर कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर है। सबसे बड़ा सवाल यही है कि चुनावी चक्रव्यूह के सातवें द्वार को कौन भेदेगा। अब सभी को नतीजों का इंतजार है। दस मार्च को मतगणना होगी और लोगों की नजर फिलहाल दिग्गजों पर लगी हुई है।

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने आजमगढ़ से सांसद हैं। ऐसे में यहां उनका भी इम्तिहान होगा। पिछले चुनाव में यहां की 10 विधान सभा सीटों में पांच पर सपा, चार पर बसपा और एक पर भाजपा जीती थी। बदले समीकरण में फूलपुर पवई के भाजपा विधायक अरुणकांत यादव चुनाव मैदान से बाहर हैं। यहां उनके पिता पूर्व सांसद रमाकांत यादव सपा के टिकट पर मैदान में हैं। सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के सामने भाजपा के टिकट पर ताल ठोकने वाले पूर्व सांसद रमाकांत यादव अब विधान सभा का चुनाव लड़ रहे हैं। उनके सामने बसपा ने शकील अहमद तो भाजपा ने रामसूरत को मैदान में उतारा है। आजमगढ़ सदर से आठ बार विधायक रहे पूर्व मंत्री दुर्गा प्रसाद यादव के सामने भी अपना गढ़ बचाने की चुनौती है। उनके सामने बसपा ने सुशील कुमार सिंह और भाजपा ने अखिलेश कुमार मिश्रा मैदान में है। मेहनगर में सपा ने विधायक कल्पनाथ पासवान का टिकट काट कर पूजा को मैदान में उतारा है। यहां बसपा ने पंकज कुमार और भाजपा ने मंजू सरोज को उतारा है। पूजा की हार जीत के आधार पर सपा के शीर्ष नेतृत्व के फैसले की भी अग्निपरीक्षा होगी। जौनपुर की नौ में से चार सीट पर भाजपा, एक पर अपना दल, तीन पर सपा, एक पर बसपा का कब्जा रहा है।

मल्हनी विधान सभा सीट पर सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के शागिर्द पारसनाथ यादव के बेटे एवं सपा विधायक लकी यादव मैदान में हैं। उनके सामने जदयू से बाहुबली पूर्व सांसद धनंजय सिंह ताल ठोक रहे हैं तो भाजपा ने पूर्व सांसद केपी सिंह को मैदान में उतारा है। मुलायम सिंह करहल के बाद मल्हनी में जनसभा कर इस सीट को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ दिया है। 2017 में भी उन्होंने जसवंतनगर और मल्हनी में जनसभा की थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जौनपुर सदर से भाजपा विधायक व राज्य मंत्री गिरीश यादव से खुद का मान जोड़ दिया है। यहां सपा ने पूर्व विधायक अरशद खां, कांग्रेस ने पूर्व विधायक नदीम जावेद और बसपा ने सलीम खान को मैदान में उतारा है। राज्यमंत्री खुद के विकास कार्यों और मोदी-योगी के नाम पर मैदान में हैं। चंदौली की सैयदराजा सीट पर भाजपा ने बाहुबली बृजेश सिंह के भतीजे विधायक सुशील सिंह को मैदान में उतारा है। अब चौथी बार मैदान में हैं। यहां बसपा ने अमित कुमार यादव और सपा ने मनोज कुमार को मैदान में है। भदोही के बाहुबली चेहरों में शुमार ज्ञानपुर के विधायक विजय मिश्रा को निषाद पार्टी ने टिकट नहीं दिया। विजय मिश्रा जेल से प्रगतिशील मानव समाज पार्टी के टिकट से मैदान में हैं।

दारा सिंह चौहान की परीक्षा

वन मंत्री रहे दारा सिंह चौहान ऐन मौके पर न सिर्फ दल-बदल किया, बल्कि अपनी विधानसभा क्षेत्र भी बदल दिया है। वह भाजपा के टिकट पर मऊ की मधुबन से विधायक बने थे लेकिन चुनाव से ठीक पहले वे सपा में आए और अब घोसी से चुनाव मैदान में हैं। उनके सामने भाजपा ने विजय कुमार राजभर तो बसपा ने वसीम इकबाल मैदान में है।

बनारस में तीन मंत्रियों की प्रतिष्ठा दांव पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र में तीन मंत्रियों की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। यहां शिवपुर विधान सभा क्षेत्र में भाजपा ने पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री अनिल राजभर को मैदान में उतारा है। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर के बेटे अरविंद राजभर भी मैदान में हैं। बसपा से रवि मौर्य मुकाबले को त्रिकोणीय बना रहे हैं। वाराणसी दक्षिण से भाजपा ने राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार नीलकंठ तिवारी को मैदान में उतारा है। यहां सपा ने कामेश्वर दीक्षित और बसपा ने दिनेश कसौधन पर दांव लगाया है। वाराणसी उत्तरी से राज्यमंत्री रविंद्र जायसवाल के सामने सपा ने अशफाक और बसपा ने श्याम प्रकाश को मैदान में है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

यूक्रेन वॉर का वैश्विक प्रभाव

यूक्रेन में जारी लड़ाई का चौतरफा असर दिखने लगा है। इसके कारण यूरोप, अफ्रीका और एशिया के लोगों की खाद्य आपूर्ति और आजीविका पर संकट गहरा गया है। काला सागर का विशाल क्षेत्र उपजाऊ खेतों पर निर्भर है। युद्ध के कारण यहां के लाखों यूक्रेनी किसान पलायन कर चुके हैं। इसके कारण खेती-किसानी चौपट हो गयी है। बंदरगाह बंद हो चुके हैं। ये बंदरगाह खाद्य आपूर्ति के बड़े केंद्र हैं।

यूक्रेन को नाटो का सदस्य बनने से रोकने के लिए रूस ने जिस युद्ध की शुरूआत की है, वह अब पूरे विश्व को प्रभावित करने लगा है। यूक्रेन में तबाही का मंजर है। अब तक 15 लाख लोग देश छोड़कर जा चुके हैं। खेती-किसानी और व्यापार समेत सबकुछ बर्बाद हो चुका है। युद्ध का असर कच्चे तेल की कीमतों पर भी पड़ा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत रिकॉर्ड 139 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। सवाल यह है कि क्या यूक्रेन वॉर दुनिया के लिए एक बड़ा संकट बनने जा रहा है? क्या आर्थिक मंदी की आहट सुनायी देने लगी है? क्या विश्व के तमाम देशों को आने वाले दिनों में महंगाई और खाद्य संकट से जूझना पड़ेगा? क्या तेल की कीमतों में भारी इजाफा आम आदमी की कमर तोड़ देगी? क्या बेरोजगारों की फौज और बढ़ जाएगी? क्या स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय बाजार की चाल डांवाडोल हो जाएगी?

पिछले 13 दिनों से रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है। इसने बड़े वैश्विक संकट को जन्म दिया है। यूक्रेन में जारी लड़ाई का चौतरफा असर दिखने लगा है। इसके कारण यूरोप, अफ्रीका और एशिया के लोगों की खाद्य आपूर्ति और आजीविका पर संकट गहरा गया है। काला सागर का विशाल क्षेत्र उपजाऊ खेतों पर निर्भर हैं। युद्ध के कारण यहां के लाखों यूक्रेनी किसान पलायन कर चुके हैं। इसके कारण खेती-किसानी चौपट हो गयी है। बंदरगाह बंद हो चुके हैं। ये बंदरगाह खाद्य आपूर्ति के बड़े केंद्र हैं। यही से दुनिया के तमाम देशों में रोटी, नूडल्स के लिए गेहूं एवं अन्य खाद्य सामग्री की आपूर्ति की जाती है। हालांकि गेहूं की आपूर्ति में अभी वैश्विक व्यवधान नहीं आया है लेकिन इसमें बाधा आ सकती है। लिहाजा खाद्य सामग्री की कीमतों में 55 फीसदी की वृद्धि हुई है। यदि युद्ध लंबे समय तक चलता है तो यूक्रेन से सस्ते गेहूं के आयात पर निर्भर देशों को खाद्य सामग्री की किल्लत का सामना करना पड़ सकता है। इससे मिस्र और लेबनान जैसे देशों में बड़ी संख्या में गरीबों की संख्या बढ़ेगी। यूरोप में मांस और डेयरी के उत्पाद महंगे हो सकते हैं। यूक्रेन संकट का असर भारत पर भी पड़ेगा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के बढ़े दामों का असर भारत की पेट्रोल और डीजल की कीमतों पर पड़ेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि देश में पेट्रोल की कीमतों में 15 से 20 रुपये लीटर की वृद्धि हो सकती है जबकि डीजल में 8 से 12 रुपये की बढ़ोतरी हो सकती है। जाहिर है तेल के दामों में इजाफे का असर खाद्य समेत तमाम वस्तुओं के दामों पर पड़ेगा और महंगाई बढ़ेगी। इसका सीधा असर आम आदमी पर पड़ेगा। कोरोना काल में बढ़ी बेरोजगारी से जूझ रही जनता को महंगाई की मार झेलनी पड़ेगी।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

मेडिकल शिक्षा में सुधार जरूरी

योगिता मुंजाल

भारत में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संरचना पर ठोस ध्यान देने की जरूरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा स्थापित मानक के अनुसार प्रति एक हजार लोगों के लिए कम से कम एक डॉक्टर होना चाहिए। भारत में यह अनुपात अभी केवल 0.74 है। हमारे यहां 157 नये मेडिकल कॉलेज खुले हैं तथा लगभग 84 हजार के आसपास कुल मेडिकल सीटें हैं अगर हम देखें तो पिछले साल 16 लाख बच्चे नीट की परीक्षा में शामिल हुए थे। इस परीक्षा के माध्यम से मात्र 84 हजार सीटों पर प्रवेश होता है। इनमें आधी सीटें ऐसी हैं, जिन पर सरकारी कॉलेजों में एडमिशन होता है। वहां अपेक्षाकृत फीस कम होती है, लेकिन अन्य सीटों पर प्रवेश के लिए फीस बहुत ज्यादा है। अब 84 हजार में से 42 हजार सीटों पर मेडिकल की पढ़ाई का खर्च अधिक है। सभी छात्र उसे दे पाने में सक्षम नहीं होते। एनआरआई सीटों पर फीस काफी ज्यादा होती है।

भारत में मेडिकल की पढ़ाई का खर्च 60 लाख से लेकर 1.20 करोड़ रुपये तक होता है अगर एनआरआई सीट या प्राइवेट कॉलेज है तो खर्च और भी ज्यादा हो सकता है। एनआरआई प्रायोजित सीट भी हो सकती है। हमारे देश में चिकित्सकों की समुचित संख्या हासिल करने की दिशा में हो रहे प्रयास पर्याप्त नहीं है। भले ही 157 नये मेडिकल कॉलेज आये हैं लेकिन यह संख्या हमारी आबादी की जरूरत के हिसाब से काफी कम है। बढ़ती आबादी को देखते हुए अगर हम लगातार नये मेडिकल कॉलेज स्थापित करते हैं तब हम विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्धारित मानक को हासिल कर सकते हैं। ऐसा नहीं होता है तब पढ़ाई पर दबाव बना रहेगा और अपेक्षित संख्या में डॉक्टर भी उपलब्ध नहीं होंगे। जरूरत के उस अंतराल को भरने के लिए हमारे छात्र अन्य देशों का रुख करते हैं। बाहर जाने का एक कारण यह भी है कि भारत में आपको मेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए नीट की परीक्षा देनी होती है, जबकि यूक्रेन या किसी अन्य देश में ऐसी किसी प्रवेश परीक्षा की बाध्यता नहीं है। यूक्रेन समेत अनेक देशों में शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी में है तो छात्रों को नयी भाषा सीखने की जरूरत नहीं है। इससे भी आसानी हो जाती है और छात्र की पूरी पढ़ाई 25 से 30 लाख में पूरी हो जाती है। इसके बाद फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट के लिए एक टेस्ट होता है जो उन्हें यहां आकर पास करना

होता है। उसका अनुपात बहुत कम है। एक प्रस्ताव यह भी है कि यह यूनिफॉर्म टेस्ट होगा। उससे स्पष्ट होगा कि हमारे यहां प्राइवेट कॉलेज किस स्तर की शिक्षा देते हैं। कुल मिला कर यूक्रेन आदि देशों में मेडिकल एजुकेशन के लिए जाने का मकसद अपेक्षाकृत सस्ती पढ़ाई है अगर हम अपने यहां सीटों को बढ़ाएं तो उससे हालात कुछ हद तक बदल सकते हैं। इंजीनियरिंग सीटों में ऐसी स्थिति नहीं है अगर मेडिकल शिक्षा में आवश्यकता अनुरूप सुधार नहीं होता है तो पर्याप्त डॉक्टरों और स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर चिंताएं बरकरार रहेंगी। जिन देशों में सस्ती मेडिकल शिक्षा उपलब्ध हैं, जाहिर-सी बात है कि लोग वहां का रुख करेंगे। सीमित बुनियादी ढांचे में आप सीटों को नहीं बढ़ा सकते हैं। इसके लिए पहले बुनियादी व्यवस्था तैयार करनी होगी। जो नये मेडिकल कॉलेज खोलेंगे या जो पहले से मौजूद हैं, उनमें व्यवस्थागत सुधार करना होगा। जहां सौ सीटों की व्यवस्था है, वहां 200 या 400 नहीं कर सकते। प्रयोगशालाओं में काम करने के लिए जिस माहौल और सुविधा की दरकार होती है, उसे भी ध्यान में रखना होता है। सबसे अधिक जरूरी है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा। स्वास्थ्य अति महत्वपूर्ण क्षेत्र है, उसमें किसी भी तरह का खिलवाड़ नहीं किया जा सकता है। यदि हम इन बातों का ध्यान रखते हुए हर साल पांच से दस नये मेडिकल कॉलेज खोलें, तो वर्तमान अंतराल को भरना संभव हो सकेगा। फीस की संरचना सीटों की उपलब्धता पर निर्भर होती है अगर ज्यादा सीटें होगी तो फीस कम हो जाती है। यहां मांग और आपूर्ति के फार्मूले को समझने की जरूरत है। अगर सीटों की संख्या में बढ़ोतरी होती है तो कुछ और छात्रों के लिए मौके बन जायेंगे. इससे मेडिकल शिक्षा थोड़ी सस्ती हो जायेगी और बाहर जानेवाले छात्रों की संख्या भी घटेगी। बाहर पढ़ कर देश आने वाले छात्रों में से 20 से 25 प्रतिशत बच्चे मेडिकल प्रैक्टिस की परीक्षा पास कर पाते हैं। साल 2019 करीब 35 हजार छात्रों ने यह परीक्षा दी थी। उसमें से लगभग 10 हजार बच्चे पास हुए थे. स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने की जरूरत है। बीते कई सालों में स्वास्थ्य अवसंरचना को लेकर प्रगति हुई है। इससे जीवन प्रत्याशा बढ़ी है, लेकिन स्वास्थ्य ढांचे को लगातार बेहतर करने की आवश्यकता है।

आफत से राहत में नयी कार्य संस्कृति

सुरेश सेठ

विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना की तीसरी लहर का दबाव लगभग खत्म हो चुका है। तीसरी लहर में मृत्यु की दर कम रही और संक्रमित लोगों को अस्पताल जाने की जरूरत भी कम पड़ी। देश में रिकार्ड स्तर पर टीकाकरण अभियान चला, देखते ही देखते एक सौ अस्सी करोड़ टीकों की खुराक लोगों को लगा दी गयी। पंद्रह से अठारह आयु वर्ग के किशोरों को टीका लगाने का फैसला हुआ और रिकार्ड समय में उनको भी पहली डोज लगा दी गयी। अब बारह से पंद्रह वर्ष की आयु के किशोरों को भी टीका लगाने का निर्णय ले लिया गया है। भारतीय टीके 'कोवैक्सीन' से लेकर 'कोवावैक्स' तक को अमेरिकी मार्डना और फाइजर से किसी भी दृष्टि से कम नहीं पाया गया बल्कि लागत और आसानी से सुरक्षित रख सकने के गुण के कारण इन टीकों की मांग भी ब्रिटेन और अमेरिका के टीकों से कम नहीं है। देश में टीकाकरण का यह अभियान रिकार्ड स्तर पर चला इसीलिए तीसरी लहर के डेल्टा प्लस और ओमीक्रोन के मिले-जुले परन्तु त्वरित प्रभाव से हमें इतनी जल्दी निजात मिल गयी।

अब यह भी सोचा जा रहा है कि अगर टीकाकरण का अभियान उसी तेजी से चलता है, लोग शारीरिक अंतर रखने और चेहरे पर मास्क पहनने को एक स्वाभाविक आदत बना लेते हैं तो यह महामारी उन मारक तेवरों के साथ फिर देश में प्रकट नहीं होगी, जिस प्रकार पिछले दो वर्ष देश इसे झेलता रहा है। इसके साथ यह खबर आ रही है कि अभी तक अपने देश में लगाये जाने वाले टीके कोरोना निरोधी थे, ये रोगी और संक्रमित की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा देते थे। जरूरत महसूस की जा रही थी कि हमारा फार्मा उद्योग ऐसे कोरोना उन्मूलक टीके भी बनाये, जो इसके रूप बदलते वायरस को जड़ से पकड़ उखाड़ फेंकें, ताकि इस देश की श्रम शक्ति और इसके कामकाजी लोग अवसादग्रस्त होकर हताशा के अंधड़ में चकराते न फिरें या अपना देश छोड़कर विदेशों की ओर पलायन का रुख न अपनायें। दो वर्ष का कोरोना ग्रस्त समय जो इस धरती के लोगों पर गुजरा, वह आर्थिक आपदा का समय था। इसमें महंगाई ने डॉ. मनमोहन सिंह काल की बुलन्दियों को फिर छुआ। बेरोजगारों की संख्या में इतनी आश्चर्यजनक वृद्धि हुई।

इसमें आर्थिक पाबन्दियों के कारण लकवाग्रस्त निवेश, व्यवसाय, उत्पादन ने मेहनती मजदूरों को उनकी महानगरीय जड़ों से उखाड़ अपनी जड़ों अर्थात अपने ग्रामीण अंचलों में वापस जाने पर विवश कर दिया जहां अधिकांश किसान आज भी दो एकड़ से पांच एकड़ तक की सीमा में खेती करते हैं और मुश्किल से अपनी गुजर-बसर करते हैं। अब इनमें आ जुड़ा उनके परिवारों का वह अंश जो वैकल्पिक रोजगार की तलाश में महानगरों में जा बसा था या विदेशों का रुख किया था। कोरोना की एक लहर से दूसरी, तीसरी और अब चौथी के आने की आशंका बताने वालों की कमी नहीं है इसीलिए यह श्रम शक्ति फिर महानगरों की ओर जाने या प्रवासी बनने के लिए तैयार नहीं हो रही। आंकड़े चौंकाते हैं कि जितना उखड़े हुए शरणार्थियों का पलायन भारत विभाजन के समय हुआ था उससे कहीं अधिक इस कोरोना की मारक लहरों की दहशत ने कर दिया। लोग गांवों में लौटने के बाद वहां से जाने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। सरकार ने वचन दिया कि उनके लिए उनके गांवों और इर्दगिर्द के कस्बों में लघु, कुटीर और मध्यम दर्जे के उद्योगों की कायापलट से यह संभव किया जायेगा। तब दो आर्थिक बूस्टर दिये और स्किल्ड भारत अभियान से हर वर्ष दो लाख नये रोजगार पैदा करने की घोषणा की गई, लेकिन वह अब तक कुछ हजारों तक क्यों सिमट गया? देश के ग्रामीण समाज में लघु और कुटीर उद्योगों की नयी दुनिया बसाने की बातें बहुत हुईं, लेकिन यह दुनिया क्यों हवाई रही? गांव-घरों के पास विकसित होती नजर क्यों नहीं आयी? कहां तो कुशल भारत साढ़े पांच करोड़ को रोजगार देने के वादे कर रहा था और कहां वहां उखड़े हुए लोगों के दबाव के कारण अब करोड़ों लोग रोजगार तलाशते नजर आने लगे। स्टार्टअप उद्योगों की योजना सिर नहीं उठा रही और निजीकरण के प्रति योजनाबंदी के समर्पित हो जाने के कारण अब रोजगार मेले भी उन्हीं को समर्पित होते नजर आ रहे हैं। कोरोना के विदा लेने के माहौल के साथ आम आदमी के निर्जीव चेहरों पर जो रौनक लौटनी चाहिए थी, वह क्यों नहीं आ पायी? ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के नौजवान अपनी शिक्षा को रोजगार उन्मुख न पा फिर विदेशों का रुख कर रहे हैं। कोरोना के इन दो वर्षों ने देश की युवा पीढ़ी को अवसाद दिया या इस माहौल से पलायन वाद की उत्कट इच्छा। अब जब माहौल के सामान्य हो जाने की उद्घोषणा सरकारी ही नहीं, सार्वजनिक स्तर पर भी हो रही है, अपनी धरती पर जीते-मरते हुए श्रम की महत्ता को फिर से स्थापित किया जाना चाहिए। लेकिन विडंबना यह है कि इस प्रेरणा के पुनर्जागरण के स्थान पर राहत और रियायत संस्कृति ने जन्म ले लिया है। नवनिर्माण के कठिन रास्ते को अपनाने के स्थान पर चोर दरवाजा संस्कृति ने जन्म ले लिया है। यह संस्कृति अध्यवास, शोध और नयी जमीन तोड़ने वाली पुस्तक संस्कृति के बल पर आगे नहीं बढ़ना चाहती, बल्कि उसके स्थान पर ऐसी संस्कृति उभर रही है, जो संपर्क, परिवारवाद या हथेलियों पर सरसों जमाने का दम भरती है। यह भारत जैसे उभरते और संवरते देश के लिये एक ऐसा दुखद परिवर्तन है कि जहां देश की युवा शक्ति अपनी जमीन पर खड़े हो, निर्माण के लिये डटने के स्थान पर इस धरती से प्रवासी हो अजनबी धरती पर अपने सपनों के गांव बसाना चाहती है।

डेस्टिनेशन वेडिंग के लिये ये हैं भारत की महत्वपूर्ण जगह

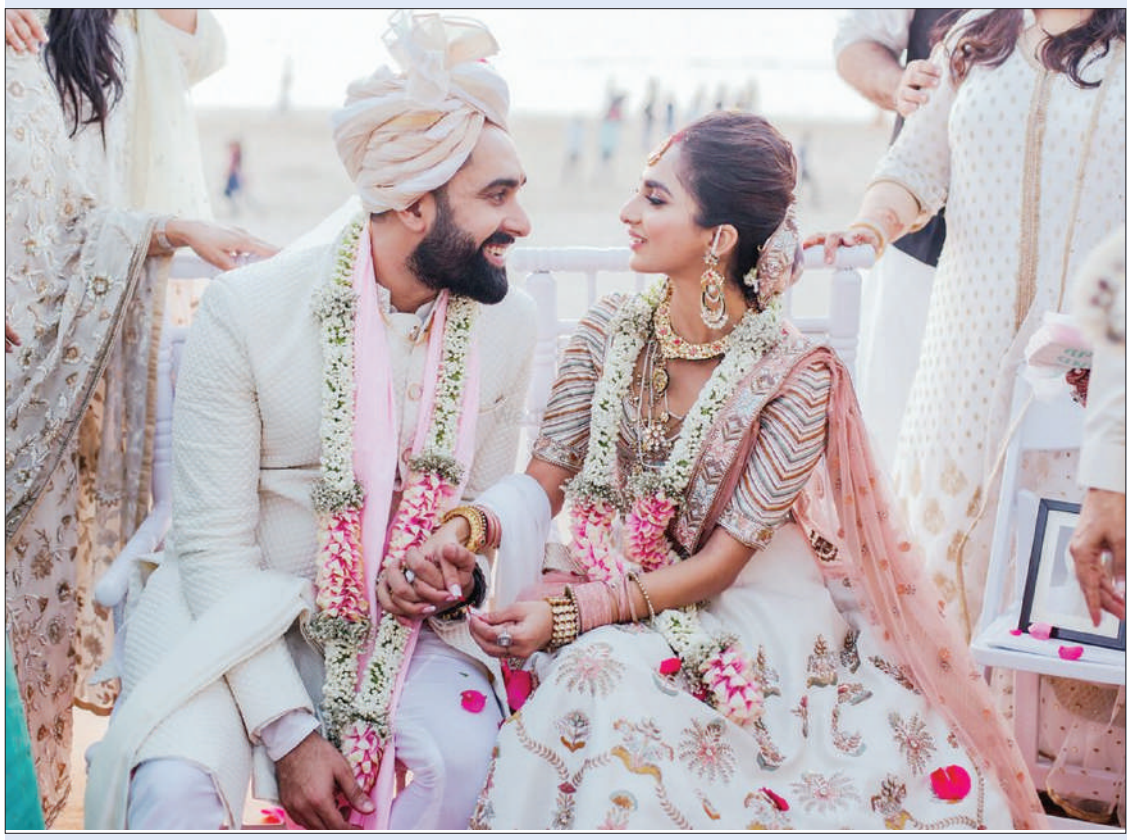

कोविड की तीसरी लहर अब धीरे-धीरे शांत हो रही है। ऐसे में कई लोगों की शादी की प्लानिंग भी शुरू हो गई है। अगर आप भी आने वाली गर्मियों के मौसम में शादी की प्लानिंग कर रहे हैं, लेकिन वेन्यू के बारे में अब भी कंफ्यूज्ड हैं? तो फिक्र न करें, हम आपकी मदद कर सकते हैं। खासतौर पर अगर आप डेस्टिनेशन वेडिंग चाह रहे हैं। हम आपको बता रहे हैं ऐसी जगहों के बारे में जो डेस्टिनेशन वेडिंग की लिस्ट में सबसे ऊपर रहती हैं। आइए जानें 5 ऐसी जगहों के बारे में जहां आप सपनों जैसी शादी को रिएलिटी में बदल सकते हैं।

गोवा

गोवा देश के उन राज्यों में से एक है जहां एक ही जगह आपको कई चीजें मिल जाएंगी। कुछ सालों से यह जगह डेस्टिनेशन वेडिंग्ज के लिए पहली पसंद बन गई है। इसलिए अगर आप अपनी शादी सपनों जैसी चाहते हैं, तो गोवा आपके लिए बेस्ट रहेगा। आप या तो बीच पर शादी कर सकते हैं या फिर एक वेडिंग प्लानर को बुक कर लें जो सभी चीजों का ध्यान रखे।

शिमला

शिमला एक खूबसूरत हिल स्टेशन तो है ही, साथ ही यह शादियों में के लिए लोगों की पसंदीदा जगह बनता जा रहा है। यहां ऐसी कई खूबसूरत प्रोपर्टीज़ हैं, जो काफी पुरानी होने के साथ खूबसूरत भी हैं। यहां शादी का अनुभव आप कभी भूल नहीं पाएंगे।

अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स

यह डेस्टिनेशन उन लोगों के लिए है जो खासतौर पर द्वीप पर शादी रचाना चाहते हैं। समुद्र के किनारे पाम के पेड़ और गर्मियों के मौसम में सुहाना मौसम आपकी शादी को यादगार बना देगा। यह जगह इतनी खूबसूरत है कि आपको हनिमून के लिए कहीं और जाने की जरूरत नहीं है।

केरल

शांत बैकवॉटर और समुद्र के किनारे लगे पाम के पेड़ का नजारा केरल की शादी को सुंदर और सबसे अधिक मांग वाली जगह बनाता है। बीच वेडिंग के लिए आप एलेप्पी या फिर कोवलम को चुन सकते हैं। यह ऐसी जगहें हैं जहा महमान वैकेशन भी मनाना चाहेंगे। इन दोनों जगहों पर आपको खूबसूरत रिसॉर्ट्स और खूबसूरत वियू मिल जाएगा।

तवांग

गर्मी के मौसम में यह जगह शादी के लिए बेस्ट है, क्योंकि यहां कई मोनेस्ट्रीज़ हैं, साथ ही सुहाना मौसम किसी भी इवेंट को और खूबसूरत बना देता है। भीड़ से दूर शांत और सुकून से भरा वातावरण किसी की भी शादी को खास बना सकता है।

कहानी — कौआ और लोमड़ी की दोस्ती

एक घने जंगल मे एक कौआ और लोमड़ी रहती थी। दोनो में गहरी दोस्ती थी। वे दोनों जहा भी जाते थे साथ जाते थे। वे जो खाते थे, वे साथ मे कहते थे इतना ही नही कौआ को अगर कोई अच्छी चीज मिलती थी। तो वह लेकर आता था और लोमड़ी और कौआ साथ मे बैठकर खाते थे। उसी जंगल मे एक सियार रहता था। सियार को उनकी दोस्ती देखकर बहुत जलन होता था। वे सोचता था कैसे इन दोनों की दोस्ती तोड़े, वे दिन रात बस इसी सोच में डूबा रहता था। एक दिन सियार रात भर सोचा तो उसे एक आइडिया आई। वह सुबह ही लोमड़ी के पास अनजान बनकर गया और बोला कि लोमड़ी भाई तुम मुझसे दोस्ती करोगे। लोमड़ी उसे देखने लगी। फिर से सियार बोला मैं इस जंगल मे नया हु मुझे कोई नही जानता है। क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगी। इतना सुनते लोमड़ी बोली तुम पहले चलो नेरे साथ मेरे दोस्त के पास। मुझे उनसे पूछना पड़ेगा वो बोले हा, तो मैं तुमसे दोस्ती करोगी। फिर वह कौआ के पास गए और कौआ से लोमड़ी सारी बात बताई। तब कौआ बोला हमे किसी पर ऐसे ही विश्वास नही करना चाहिए। फिर लोमड़ी बोली क्या मैं तुम्हे जानती थी फिर भी हैम दोनो दोस्त बने, वैशे ही हम भी इसे अपना दोस्त मान लेते है। कौआ बोला ठीक है। फिर तीनो दोस्त बन गए। एक दिन की बात है जब कौआ कहि चला गया तो सियार ने सोचा, यही मौका है। कौआ और लोमड़ी को अलग करने का सियार लोमड़ी के पास गया और बोला लोमड़ी भैया अपने बगल वाला जंगल मे बहुत मीठा मीठा फल है। चलो न हम वहा से कुछ फल खाकर आते है। लोमड़ी बोली ठीक है। चलो, दोनो एक फल के खेत मे गए दोनो फल खाने लगे। तभी सीकरी आया और लोमड़ी पर जाल फेंक दिया यह देख सियार बहुत खुश हुआ। और सोचा अब यह मर जाएगी। तो हमे खाने को मिलेगा। यह सोचते सोचते वह बहुत खुश हुआ और एक बड़ा सा पत्थर के पास जाकर छुपकर लोमड़ी और देखने लगा। तभी कौआ उसी रास्ते से घर जा रहा था। कौआ ने लोमड़ी को देखा और लोमड़ी के पास गया। और सारी बात पूछा लोमड़ी ने सारी बात बताई उसके बाद कौआ ने लोमड़ी को एक उपाये बताया। तू मरने की एक्टिंग करना जब तुम्हें मरा हुआ शिकरी समझ लेगा तो तुम पर से वह जाल हटाएगा। जैसे वह जाल हटाएगा वैशे तुम तेजी से भाग जाना। अब इधर सियार के मन में लड्डू फूटने लगा वह सोचने लगा, अब जाल निकलेगा। तभी शिकारी आया और लोमड़ी को मरा देखकर वह जाल उठाया। जाल उठाते ही लोमड़ी भाग गई। भागता देख शिकारी उस पर बरक्षी चलाई बरक्षी लोमड़ी को न लगकर सियार को लग गया। सियार बेचारा मार गया। अब लोमड़ी और कौआ दोनों साथ चले गए।

सीख : किसी के साथ बुरा नहीं करना चाहिए। तब हमारे साथ भी बुरा नहीं होगा।

5 अंतर खोजें

हंसना मना है

लड़की का पिता अगर कहे हमारी लड़की तो गाय है गाय उसमें सींगवाली शब्द **silent** होता है। और विदाई के वक्त जब दूल्हे से कहा जाता है। ख्याल रखना इसमें अपना शब्द **Silent** होता है।

शरीर कहता है कसरत कर ले, आत्मा को रबड़ी, जलेबी, समोसे, कचौड़ी और छोले-भटूरे चाहिए। पर शरीर तो नश्वर है, और आत्मा अजर-अमर तो आत्मा की ही सुननी चाहिये। पंडित जी ने कुंडली मिलाई 36 के 36 गुण मिल गये। लड़के वालों ने मना कर दिया। लड़की वाले हैरान होकर पूछने लगे। जब सारे गुण मिलते हैं तो आप मना क्यों कर रहे हैं ? लड़के वाले- हमारा लड़का बिल्कुल लफ़ंगा है। अब क्या बहू भी उस जैसी ले आये।

एक बार क्लास में मैडम ने बच्चों से एक सवाल पूछा, मैडम- तुम सब में से सबसे बहादुर कौन है बच्चों? सारे बच्चों ने हाथ उठा दिए। मैडम ने एक और सवाल पूछा, मैडम- अच्छा बताओ, अगर तुम्हारे स्कूल के सामने कोई बम रख दे तो तुम क्या करोगे? टीटू बोला मैडम जी एक, दो मिनट देखेंगे अगर कोई ले जाता है तो ठीक है, नहीं तो स्टाफरूम में रख देंगे।

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — आज आप अपनी क्रिएटिविटी से अपने प्रेमी का दिल जीत लेंगे। तो इसके विपरीत शादीशुदा लोग अपने जीवन में तनाव महसूस करेंगे। स्वास्थ्य समस्याओं के लिए घरेलू उपाय अपनाएं।

वृषभ — इस राशि के लोगों के गृहस्थ जीवन में खुशनुमा समय आएगा। अपने परिवार व पार्टनर के साथ वक्त बिताएंगे। यह अवधि निवेश प्रयासों के लिए परिपक्व है, जो आपके करियर को बेहतरी की ओर ले जा सकती है।

मिथुन — मिथुन राशि के जातकों के जीवन में आज प्रेम और रोमांच बढ़ता दिखाई देगा। प्रेमियों को जीवन में दिन के आखिर में कोई परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, मगर प्यार बरकरार रहेगा।

कर्क — कर्क राशि के जातकों का गृहस्थ जीवन में पहले से कई बेहतर होगा। तो वहीं प्रेम जीवन बिता रहेगा जातकों के लिए भी दिन बेहद अच्छा व लाभप्रद साबित होगा। अपने साथी को समझने के प्रयास सफल होंगे।

सिंह — आज आपकी तेज बुद्धि से आपका पार्टनर प्रसन्न होगा। गृहस्थ जीवन को पहले से बेहतर करने के लिए आज पार्टनर भी कोशिश करेगा। रिश्तों में रोमांस की कमी आज पूरी होगा।

कन्या — आज पति पत्नी के बीच किसी बात को लेकर तनाव रह सकता है। एक-दूसरे के तनाव को करने के प्रयास करेंगे तो झगड़ा हो सकता है। इसलिए चीज़ों को संभलने के लिए थोड़ा समय दें।

तुला — आज आप अपने पार्टनर के लिए कोई खूबसूरत तोहफा खरीद सकते हैं। जिससे आपके रिश्ते में प्यार बढ़ेगा। पति-पत्नी आज छुट्टी का लुत्फ उठाएंगे, और कहीं बाहर घूमने का प्लॉन बनाएंगे।

वृश्चिक — आज आप अपने प्रेम जीवन को आगे बढ़ाने के लिए एक कदम आगे बढ़ाएंगे। मगर ध्यान रहे पार्टनर की भावनाओं को भी समझें। किसी भी तरह का बड़ा फैसला जल्दबाजी में आकर न करें।

धनु — इस राशि के लोग आज अपने पार्टनर के साथ रोमांटिक समय बिताएंगे। तो वहीं गृहस्थ जीवन में पति-पत्नी भी एक-दूसरे को सरप्राइज दे सकते हैं। जिससे दिन यादगार साबित हो सकता है।

मकर — मकर राशि के विवाहित लोग, आज अपने पार्टनर के साथ सुसराल जा सकते हैं। जहां जाकर अपने शादी की सुनहरे यादें एक बार फिर जीएंगे। दिन अच्छा व खुशनुमा बीतेगा।

कुम्भ — जिन लोगों की नई-नई शादी हुई है, वो आज अपनी शादी व गृहस्थ जीवन का सुख पाएंगे। पार्टनर के साथ-साथ पूरे परिवार का प्यार आज आपको इमोशनल करेगा। जीवनसाथी से कुछ तनातनी संभव है।

मीन — पार्टनर से बार-बार आज अपनी दिल की बातों का इज़हार करेंगे। हद से ज्यादा पार्टनर का प्यार और केयर आपको लकी फील करवाएगा। परिवार का पूरा समर्थन मिलेगा।

100 करोड़ के करीब पहुंची आलिया भट्ट की फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी

बॉलीवुड | मसाला

आलिया भट्ट की गंगूबाई काठियावाड़ी बॉक्स ऑफिस पर आग लगा रही है। संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी यह फिल्म भारत में 100 करोड़ रुपए की ओर दौड़ रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक 6 मार्च को गंगूबाई काठियावाड़ी के कलेक्शन में बड़ा उछाल देखने को मिला। शुरुआती अनुमान बताते हैं कि एक दिन में फिल्म ने 10 करोड़ रुपये से ज्यादा का कलेक्शन किया है। रिलीज के कुछ ही दिनों में गंगूबाई काठियावाड़ी ने दुनिया भर में बॉक्स ऑफिस पर 100 करोड़ रुपए का आंकड़ा पार कर लिया। फिल्म फिलहाल अपने दूसरे हफ्ते में है इसी अमिताभ बच्चन की झुंड और हॉलीवुड की द बैटमैन से कड़ी टक्कर मिल रही है। बावजूद इसके इसकी कमाई पर कोई खास असर नहीं पड़ रहा ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श के मुताबिक गंगूबाई काठियावाड़ी ने भारत में 5 मार्च को 8 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया। व्यापार विश्लेषकों के शुरुआती अनुमानों से पता चलता है कि फिल्म ने रविवार को भारी उछाल देखा। ऐसी उम्मीद की जा रही है कि रविवार को फिल्म ने भारत में लगभग 10 करोड़ रुपए की कमाई की उम्मीद की जा रही है। फिल्म की शुरुआत से पहले इसे लेकर काफी हंगामा हुआ। गंगूबाई के परिवार को कुछ आपत्ति थी जिसे लेकर उन्होंने कोर्ट का दरवाजा भी खटखटाया, बावजूद इसके फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज होने में कामयाब रही। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित, गंगूबाई काठियावाड़ी एक रियल लाइफ स्टोरी है, जो हुसैन जैदी की पुस्तक माफिया क्वींस ऑफ मुंबई पर आधारित है। फिल्म में आलिया भट्ट के अलावा अजय देवगन, पार्थ समथान, सीमा पाहवा और शांतनु माहेश्वरी ने अहम भूमिका निभाई है। जयंतीलाल गडा ने इस क्राइम ड्रामा को डायरेक्टर किया है।

10 साल बाद फिर धमाल मचाने को तैयार जेनेलिया

जेनेलिया की अपकमिंग साउथ इंडियन फिल्म का टाइटल डिसाइड नहीं हुआ है लेकिन ये जरूर पता चला चुका है कि वे किसके साथ फिर से कमबैक कर रही हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार कर्नाटक के पूर्व मंत्री जी जनार्दन रेड्डी के बेटे किरीती स्टारर में जेनेलिया लीड आएंगी। फिल्म इस महीने के अंत तक फ्लोर पर जाएगी और निर्देशक राधा कृष्ण फिल्म के कास्टिंग ग्रुप को मैनेज करने के लिए काफी एक्साइटेड हैं जेनेलिया के साथ किरीती फिल्म में डेब्यू कर रहे हैं। वे अनुभवी एक्ट्रेस संग काम करने को लेकर काफी एक्साइटेड हैं और उन्होंने सभी सीनियर्स को अपने सोशल अकाउंट पर थैंक्स कहा है। साउथ फिल्म में अपनी शानदार वापसी के बारे में बोलते हुए, जेनेलिया ने कहा, मुझे अभिनय से दूर हुए 10 साल हो गए हैं। अंत में मैं इस फिल्म के साथ कमबैक कर रही हूं और ये एक बहुत ही खास प्रोजेक्ट है। किरीती को डेब्यू के लिए शुभकामनाएं।

उन्होंने आगे कहा कि फिल्म के बेहतरीन निर्माता और बेहतरीन कास्ट है। ऐसा लगता है कि मैं एक न्यूकमर हूं औप उम्र के बाद सेट पर वापसी कर रही हूं और इस युवा टीम का हिस्सा हूं। फिल्म इंडस्ट्री में अपनी दमदार एक्टिंग से खास पहचान बनाने वालीं जेनेलिया डिसूजा ने लाखों फैंस का दिल जीता है। हालांकि, बाद में रितेश देशमुख से शादी के बाद वे बच्चों की परवरिश में बिजी हो गई थीं और इसलिए वे ग्लैमर इंडस्ट्री से दूर रहीं। अब लगभग एक दशक के बाद जेनेलिया ने तेलुगू फिल्म में वापसी को लेकर बेहद खुश हैं। इसके अलावा जेनेलिया दो शोज में भी नजर आने वाली हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

इसी साल वापसी करने का है प्लान : बिपाशा बसु

बिपाशा बसु फिलहाल फिल्मों से दूर हैं। उन्हें फिल्मों में आखिरी बार साल 2015 में एक्टिंग करते हुए देखा गया था। वहीं उन्होंने दो साल पहले वेब सीरीज डेंजरस से उन्हें डिजिटल डेब्यू किया था। अब बिपाशा बसु ने फिल्मों से इतने साल दूर रहने की वजह का खुलासा किया है। साथ ही अपने कमबैक को लेकर भी बात कही है। बिपाशा बसु ने हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट हिंदुस्तान टाइम्स से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने अपने फिल्मी करियर और निजी जिंदगी को लेकर ढेर सारी बातें कीं। फिल्मों से दूर रहने की वजह पर बात करते हुए बिपाशा बसु ने कहा है कि वह आलसी होने की वजह से फिल्मों में काम नहीं कर रही थीं। अभिनेत्री ने कहा कि मैं कुछ सालों में काम के लिए आलसी हो गई हूं, लेकिन अब 2022 में मैंने वापसी करने का प्लान किया है और कुछ मजेदार कर रही हूं। मैं इस बारे में जल्द घोषणा भी करने वाली हूं। बिपाशा बसु ने कोरोना महामारी के बारे में बात करते हुए कहा, मुझे नहीं पता था कि दुनिया किस ओर जा रही है, क्योंकि वायरस ने सभी को घर पर रहने के लिए मजबूर कर दिया था। उस समय सब कुछ इतना अप्रत्याशित था, हममें से किसी ने भी कभी अनुभव नहीं किया था। मैं बहुत सारी भावनाओं से गुजरी, और फिर दिन-ब-दिन जीना शुरू कर दिया, अपने पार्टनर (पति, अभिनेता करण सिंह ग्रोवर) के साथ साधारण चीजों और हर मिनट को एन्जॉय कर रही थी। 2021 उम्मीद लेकर आया, चीजें बदली हैं। बिपाशा बसु ने बताया है कि अब उन्होंने खुद का काम करने वाला एडिट्यूट बना लिया है। उन्होंने कहा, मैं अब पूरी तरह से ढेर सारी काम करने के लिए तैयार हूं। मैंने इवेंट में शामिल होना शुरू कर दिया है।

अजब-गजब | ये है पुतिन का रहस्यमयी ग्रैंड पैलेस

हैरान करने वाली है पुतिन की सिक्योरिटी

रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध ने खतरनाक मोड़ ले लिया है। यूक्रेन में रूसी सेना लगातार हमले कर रही है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि रूस की शर्तों को यूक्रेन मान ले, तो युद्ध समाप्त हो जाएगा। इस युद्ध के बीच पुतिन की सबसे चर्चा ज्यादा हो रही है। तो आइए इसी कड़ी में हम आपको पुतिन के सीक्रेट हाउस के बारे में बताते हैं। रूस के राष्ट्रपति पुतिन का घर लग्जरी वजहों से दुनियाभर में मशहूर है। बताया जाता है कि उनका राजमहल बेहद रहस्यमयी है। उनके इस सीक्रेट हाउस में परिंदा भी पर नहीं मार सकता है। राजधानी मास्को में स्थित पुतिन के सीक्रेट महल का नाम द ग्रैंड क्रेमलिन है। इस घर में हर तरफ रूसी राजशाही नजर आती है। रूस का पावर माना जाने वाला यह महल दुनिया के लिए किसी पहेली से कम नहीं है। क्रेमलिन एक खास दुर्ग है। ऐसा ही दुर्ग सामंतवादी युग में रूस के राजा बनाते थे।

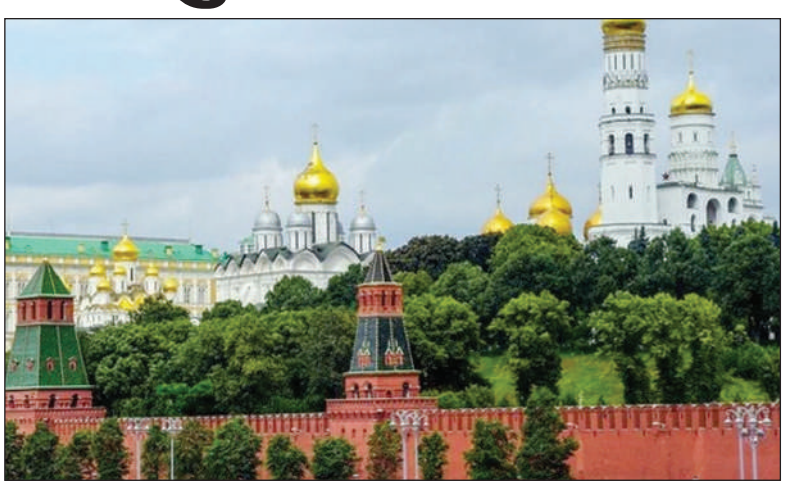

पैलेस की सुरक्षा है बेहद खास

क्रेमलिन की सुरक्षा बेहद कड़ी रहती है जिसे देखने के बाद कोई चकमा खा सकता है। इसकी सुरक्षा के लिए 21 टावरों को लगाया गया है। यह ग्रांड पैलेस दो मंजिला है, लेकिन देखने पर तीन मंजिला नजर आता है।

25000 वर्ग मीटर में बना है ये पैलेस

इस पैलेस को 25000 वर्ग मीटर में बनाया गया है। क्रेमलिन पैलेस की चौड़ाई 124 मीटर है और ऊंचाई 47 मीटर है। क्रेमलिन पैलेस को 1.5 मील लंबी और 21 फीट मोटी ऊंची दीवार से घेरा गया है। ग्रैंड क्रेमलिन पैलेस के कई टावरों के नीचे टनल बनाए गए हैं। इन सुरंगों का इस्तेमाल आपातकालीन स्थिति में निकालने के लिए किया जा सकता है।

क्रेमलिन में ही रहते हैं पुतिन

इसके सामने ही क्रेमलिन पैलेस है, जिसमें 800 से अधिक कमरे बनाए गए हैं। इस पैलेस का निर्माण 1961 में किया गया था जो 16 मीटर नीचे तक है। इसका इमरजेंसी में इस्तेमाल किया जा सकता है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन क्रेमलिन में ही निवास करते हैं। उनके यहां पर आने के बारे में बेहद कम लोगों को ही जानकारी होती है। इस पैलेस की सुरक्षा बेहद खास तरह से की जाती है। इसकी बनावट के साथ ही इसमें स्पा, थिएटर, कसिनो समेत कई सुविधाएं मौजूद हैं। इस महल के डायनिंग टेबल के कुछ हिस्सों पर सोने की परत लगाई गई है। कहा जाता है कि क्रेमलिन में एक खजाना है। इसमें अरबों का सामान रखा हुआ है। इसके कमरों में रहस्यमयी गेट लगाए गए हैं।

एक कोने से कटे क्यों होते हैं सिम कार्ड्स?

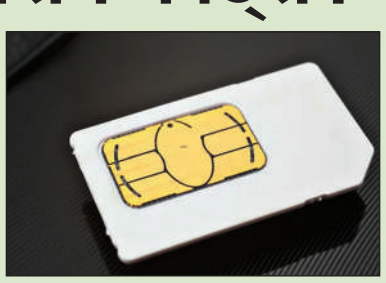

वक्त के साथ इंसान के लिए मोबाइल फोन भी बेहद जरूरी होता जा रहा है। पहले जब फीचर फोन्स हुआ करते थे तब फोन्स सिर्फ कॉल करने और उठाने के लिए इस्तेमाल होते थे मगर जब से स्मार्टफोन्स ने उनकी जगह ले ली, तब से मोबाइल फोन कॉलिंग के अलावा अन्य चीजों के लिए बहुत ज्यादा इस्तेमाल होता है। मगर मोबाइल फोन्स सिम कार्ड्स के बिना किसी काम के नहीं हैं। सिम कार्ड्स, फोन की जान हैं। पर क्या आप जानते हैं कि सिम का अनोखा डिजाइन क्यों होता है। आपने अगर सिम कार्ड देखा होगा तो जरूर गौर किया होगा कि वो एक कोने से कटा रहता है। कभी आपने सोचा कि इसका कारण क्या है? चलिए हम आज आपको बताते हैं। कुछ सालों पहले तक सीडीएमए तकनीक के फोन होते थे जिनमें सिम ही नहीं लगते थे। वो सिर्फ एक ही कैरियर से लिंक होते थे। मगर बाद में जब सिम पड़ने लगे यानी जीएसएम तकनीक इस्तेमाल होने लगी तो सिम का डिजाइन रेक्टैंगल के आकार का था। इस तकनीक के जरिए सिम लगाने-निकालने की जरूरत महसूस होने लगी। उस वक्त के सिम में कोने कटे नहीं थे। तब सिम निकालने और लगाने में काफी मुश्किल होती थी। यही नहीं, लोगों को समझ ही नहीं आता कि सिम का सीधा और उल्टा साइड कौन सा है। ऐसे में लोगों को सिम से जुड़ी कई समस्याएं होती थीं। तब नेटवर्क प्रोवाइडर्स ने सिम के लिए अलग डिजाइन तय किया। सिम के एक कोने को काटा गया जिससे आसानी से मोबाइल में फिट किया जा सके और निकाला जा सके।

सिम कार्ड को फिट करने के लिए किए गए बदलाव

सिम के अलावा मोबाइल में जहां सिम लगाया जाता है, वहां का डिजाइन भी बदला गया। उसमें भी ऐसा खांचा बनाया गया जिसमें सिम आसानी से फिट हो जाए और निकालने के लिए एक जगह बनी रहे जिससे उसे निकाला जा सके। टेलिकॉम कंपनियों की इस व्यवस्था के कारण ही लोगों को सिम ऑपरेट करने में कम मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अब आप फोन में देखेंगो तो सिम कार्ड की ट्रे में भी सिम को सही साइड से लगाने का निशान बना रहता है।

कानपुर: डीसीएम से टकराई कार, चार की मौत, दो जखमी

» कानपुर-सागर हाईवे पर ओवरटेक करते समय हुआ हादसा, दो मृतकों की शिनाख्त में जुटी पुलिस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। कानपुर-सागर हाईवे पर ओवरटेक करते समय तेज रफ्तार कार सामने से आ रही डीसीएम से टकरा गई और उसमें सवार चार लोगों की मौत हो गई जबकि दो लोगों की हालत गंभीर है। कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और पुलिस को बाडी काटकर फंसे लोगों को बाहर निकालना पड़ा। घायलों को लाला लाजपत राय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दो मृतकों की पहचान हो पाई है, जो शिवराजपुर के रहने वाले थे।

बिधनू थाना प्रभारी अतुल सिंह के मुताबिक, दिल्ली के नंबर की आर्टिगा कार घाटमपुर की ओर जा रही थी। अफजलपुर गांव के पास पेट्रोल पंप के सामने कार ने

डंपर को ओवरटेक करने का प्रयास किया और सामने से आ रही डीसीएम से टकरा गई। टक्कर इतनी तेज थी कि कार में आगे बैठे दो युवक उछल कर सड़क पर जा गिरे। वहीं, कार में सवार चार अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने कार की बाडी कटवाकर चारों लोगों को बाहर निकाला और सीएचसी बिधनू ले गए, जहां डाक्टर ने उन्हें एलएलआर अस्पताल रेफर कर दिया। थाना प्रभारी के मुताबिक, चार लोगों की मौत हो चुकी है। दो गंभीर रूप से घायल हैं।

मृतक संदीप और नितिन शिवराजपुर के उदितपुर के रहने वाले थे। पुलिस अन्य की पहचान के प्रयास में जुटी है। कार पर डीएल-11सीए 8035 नंबर पड़ा है। इसके आधार पर बताया जा रहा है कि कार दिल्ली के रोहणी निवासी मंजीत कुमार की है। स्वजन ने बताया कि कार से आठ लोग रमईपुर निवासी रियाज के वलीमा में शामिल होने गए थे। वहां से छह लोग निकले थे। कार सवार घायलों को लेकर गांव के लोग पुलिस के साथ बिधनू सीएचसी गए थे। यहां इमरजेंसी ड्यूटी पर तैनात डा. अवधेश कुमार ने दो को मृत बताया और अन्य चार को गंभीर रूप से घायल बताकर एलएलआर अस्पताल रेफर कर दिया, जिसमें अन्य दो ने रास्ते में दम तोड़ दिया।

मेरठ में व्यापारी को गोली मारी, बदमाश फरार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेरठ। वेदव्यासपुरी में बदमाशों ने आस्था किराना स्टोर पर धावा बोल दिया। शोर मचाने पर आसपास के व्यापारियों ने बदमाशों को घेर लिया, जिस पर बदमाशों ने तीन राउंड फायरिंग की। एक गोली व्यापारी के पैर में लग गई। इसके बाद बदमाश भीड़ के चंगुल से छूटकर भाग गए। व्यापारी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

लूट ले गए 25 हजार

टीपीनगर थाने के वेदव्यासपुरी में व्यापारी मोहन गर्ग और शेखर गर्ग रहते हैं। दोनों भाइयों ने वेदव्यासपुरी चौकी के समीप दुकान खोल रखी है। मोहन गर्ग की सृष्टि स्टेशनरी की दुकान है जबकि शेखर की आस्था किराना स्टोर के नाम से दुकान है। शेखर गर्ग ने बताया कि सोमवार रात पौने नौ बजे दो बदमाश पैदल आए। उन्होंने पहले सामान खरीदने की बात कही। इसके बाद तमंचा निकाल कर गल्ले में रखे 25 हजार लूट लिए। यह देखकर शेखर ने शोर मचा दिया। भाई का शोर सुनकर मोहन गर्ग दौड़े और एक बदमाश को पकड़ लिया जबकि दूसरा बदमाश फायरिंग करता हुआ भाग गया। तभी वहां होटल स्वामी पंकज गोयल और अन्य व्यापारी भी आ गए। उन्होंने सड़क पर ले जाकर बदमाश की पिटाई शुरू कर दी। इसी बीच बदमाश ने तमंचे से मोहन गर्ग पर फायर कर दिया। गोली मोहन गर्ग के पैर में लगी। इससे व्यापारियों में अफरातफरी मच गई और मौका मिलते ही दूसरा बदमाश भाग गया। घायल मोहन गर्ग को केएमसी अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने बदमाशों की तलाश की लेकिन सफलता नहीं मिली। एसपी सिटी, विनीत भटनागर ने बताया कि लूट का विरोध करने पर व्यापारी को गोली मारी गई है। सीसीटीवी फुटेज देखकर बदमाशों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। पहले व्यापारी के पिता ने लूट की बात नहीं कही थी।

चुनाव के दौरान 24 जिलों में दर्ज किए गए हिंसा से जुड़े 33 मुकदमे

» यूपी में सात चरणों में संपन्न हुए हैं विधान सभा चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पुलिस की मुस्तैदी के बीच सोमवार को उत्तर प्रदेश में सातवें व अंतिम चरण का मतदान भी शांतिपूर्ण संपन्न हो गया। सात चरणों में हुए मतदान के दौरान 24 जिलों में चुनावी विवाद व हिंसा से जुड़े 33 मुकदमे दर्ज हुए, जिनकी जांच चल रही है। 2017 के विधानसभा चुनाव के दौरान ऐसे 93 मुकदमे दर्ज हुए थे।

पुलिस आंकड़ों के मुताबिक मतदान के दिन चुनावी हिंसा के पांच मुकदमे दर्ज हुए। इनमें मेरठ में 10 फरवरी को, एटा में 20 फरवरी को, लखीमपुर खीरी में 23 फरवरी को, अमेठी व प्रतापगढ़ में 27 फरवरी को एफआईआर दर्ज कराई गईं। वहीं 2017 में मतदान के दौरान 93 मुकदमे दर्ज हुए थे। सोमवार को गाजीपुर समेत कुछ अन्य स्थानों पर भाजपा व सपा समर्थकों के बीच विवाद की शिकायतें आईं। चुनाव शुरू होने के साथ ही कई स्थानों पर विभिन्न दलों के कार्यकर्ताओं के बीच टकराव की घटनाओं ने पुलिस की चुनौती भी बढ़ाई थी। शाहजहांपुर में दूसरे चरण के मतदान के दौरान 14 फरवरी को फर्जी मतदान को लेकर भाजपा व सपा कार्यकर्ताओं के बीच विवाद हुआ था।

शाहजहांपुर में ही निगोही थाना क्षेत्र में चुनावी विवाद में 15 फरवरी को सपा के बूथ एजेंट सुधीर सिंह यादव की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद मैनपुरी में दो पक्षों के बीच आपसी टकराव व फायरिंग की घटना सामने आई थी। अयोध्या में भी सपा व भाजपा समर्थकों के बीच टकराव हुआ था। एडीजी कानून-व्यवस्था प्रशांत कुमार का कहना है कि सातों चरणों में पुलिस ने खास रणनीति के तहत सभी बूथों और 33 से अधिक संवेदनशील विधानसभा क्षेत्रों में सुरक्षा प्रबंध किये गए थे, जिसका परिणाम रहा कि चुनावी हिंसा की कहीं कोई बड़ी घटना नहीं हुई। मतगणना के दिन भी सभी स्थानों पर कड़ी सुरक्षा के लिए विस्तृत निर्देश दिये गये हैं।

छात्रा से गैंगरेप आरोपी फरार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर से एमए कर रही एक छात्रा को अगवा कर पहले दिल्ली ले जाया गया और फिर वहां पांच लोगों ने उनका सामूहिक बलात्कार किया। इस घटना से पुलिस- प्रशासन में हड़कंप मच गया है। पीड़िता मेरठ की रहने वाली हैं और वह मुजफ्फरनगर के खतौली कोतवाली क्षेत्र स्थित एक कॉलेज में एमए फस्ट ईयर की पढ़ाई कर रही हैं। आरोपी फरार हैं।

पीड़ित छात्रा ने अपनी शिकायत में कहा है कि वह 3 मार्च को अपने घर से खतौली स्थित कॉलेज में पेपर देने के लिए आई थीं। परीक्षा देने के बाद घर जाते समय गांव के ही शिवा, वरुण, सुमित, तरुण और बंशी ने उन्हें बहला-फुसला कर बस में बैठा लिया। उसे दिल्ली ले गए और गैंगरेप किया । इसके बाद सभी लोग पीड़ित छात्रा को अगले दिन मोदीपुरम छोड़कर फरार हो गए। किसी तरह पीड़ित छात्रा ने अपने परिजनों से संपर्क किया और नामजद तहरीर देते हुए मुकदमा दर्ज कराया है।

70 प्रतिशत कोर्स के आधार पर होगी 10 वीं व 12 वीं की परीक्षा

» कोरोना संक्रमण के कारण पढ़ाई के बाधित होने पर यूपी बोर्ड ने लिया निर्णय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। कोरोना के चलते प्रभावित हुई छात्रों की पढ़ाई को देखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद ने इस बार 70 प्रतिशत कोर्स के आधार पर बोर्ड परीक्षा संपन्न कराने का निर्णय लिया है। माध्यमिक विद्यालयों ने 10 वीं और 12वीं के विद्यार्थियों की तैयारी 70 प्रतिशत कोर्स की ही कराई है। यही वजह है कि कोर्स समय से पूरा करा लिया गया है।

विद्यालयों में सत्र की शुरुआत एक अप्रैल से होती है, लेकिन कोरोना संक्रमण की वजह से माध्यमिक विद्यालयों में पठन-पाठन सुचारु रूप से नहीं चल सका। कोरोना की दूसरी लहर के कारण विद्यालय बंद हो गए थे। दूसरी लहर जाने के बाद विद्यालय खुले भी तो उसके बाद जनवरी माह में फिर से कोरोना ने दस्तक दे दी। इसकी वजह से फिर से पढ़ाई प्रभावित हुई। अब बीते करीब

एक माह से ही विद्यालय खुले हैं। ऐसे में माध्यमिक शिक्षा परिषद ने विषय विशेषज्ञों के साथ मंथन करने के बाद 70 फीसदी कोर्स के आधार पर बोर्ड परीक्षाएं कराने का निर्णय लिया है। माध्यमिक विद्यालयों में तैयारी 70 प्रतिशत कोर्स की कराई गई है। प्रतापगढ़ के जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदा नंद कहते हैं कि कोरोना के संक्रमण के चलते प्रभावित हुए पठन-पाठन को देखते हुए इस बार माध्यमिक शिक्षा परिषद ने बोर्ड परीक्षाएं 70 प्रतिशत पाठ्यक्रम के आधार पर कराने का निर्णय लिया है। पाठ्यक्रम कम होने के बाद छात्रों को परीक्षा की तैयारी करने में ज्यादा कठिनाई नहीं आएगी।

विद्युत अभियंताओं ने दिया आंदोलन का अल्टीमेटम

» ऊर्जा निगम के चेयरमैन को सौंपा ज्ञापन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद अभियंता संघ व जूनियर इंजीनियर्स संगठन ने विभिन्न मांगों को लेकर शक्तिभवन का घेराव किया। दोनों संगठनों ने ऊर्जा निगम के चेयरमैन एम देवराज को ज्ञापन सौंपा। साथ ही अल्टीमेटम दिया है कि अनसुनी पर 15 मार्च से असहयोग आंदोलन करेंगे।

अभियन्ता संघ के महासचिव प्रभात सिंह व जूनियर इंजीनियर संगठन के अध्यक्ष जीबी पटेल ने बताया कि यदि ईआरपी, बिजली खरीद में भ्रष्टाचार, पिछले वर्ष जन्माष्टमी पर लाखों उपभोक्ताओं की विद्युत आपूर्ति ठप करने की दोषी निजी कंपनी के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई और मनमाने तरीके से किये गये नियम विरुद्ध उत्पीड़नात्मक कार्यवाही निरस्त न हुई तो 15 मार्च से प्रदेश के सभी बिजली अभियंता व जूनियर इंजीनियर संगठन असहयोग/सविनय अवज्ञा शुरू करेंगे। साथ ही चेयरमैन के किसी भी आदेश का पालन नहीं करेंगे। ईआरपी प्रणाली लागू कराने के लिए लगभग 700 करोड़ का खर्च ऊर्जा निगम प्रबंधन की ओर से किया गया है जो अन्य प्रदेशों की तुलना में कई गुना अधिक है।

चमकाए जाने लगे माननीयों के लिए आवास

राजकीय अतिथि गृहों में भी जोर-शोर से हो रही सफाई, दस मार्च को आएंगे विधान सभा चुनावों के परिणाम

गीताश्री

लखनऊ। यूपी की अठारहवीं विधान सभा के गठन के लिए सातों चरण के मतदान संपन्न हो चुके हैं। सभी को नतीजों का इंतजार है। वहीं चुनाव जीतकर आने वाले विधान सभा सदस्यों के लिए राज्य संपत्ति विभाग राजधानी स्थित विधायक निवास परिसरों में बने सरकारी आवासों को चमकाने में जुट गया है। 10 मार्च को मतगणना होगी।

राजधानी में छह विधायक निवास परिसर हैं। इनमें से दारुलशफा में विधायक निवास 1 व 2, ओसीआर में विधायक निवास-3, रायल होटल में विधायक निवास-4, मीराबाई मार्ग पर विधायक निवास-5 और पार्क रोड पर विधायक निवास-6 हैं। इनके अलावा बटलर रोड पर बहुखंडी मंत्री आवास परिसर में भी विधायकों को आवास आवंटित किये जाते हैं। चुनाव जीतकर आने वाले विधायकों को सरकारी मकान आवंटित करने के लिए इन विधायक निवास परिसरों में बने आवासों में मरम्मत, रंग-रोगन और मेंटेनेन्स का काम युद्ध स्तर पर जारी है। विधायकों को दिए जाने वाले आवासों के आवंटन पत्र राज्य संपत्ति विभाग की ओर से जिलाधिकारियों को भेजे जा रहे हैं ताकि चुनाव जीतने के प्रमाणपत्र के साथ ही विधायकों को आवास के आवंटन पत्र भी सौंपे जा सकें। नए विधायकों को आवंटित आवासों को खाली करने के लिए पुराने विधायकों को 15 दिन का समय दिया जाता है। तब तक नए विधायकों के ठहरने के लिए राजधानी के राजकीय अतिथि गृहों में इंतजाम किया जाता है। इन अतिथि गृहों में भी सफाई, रंगाई-पुताई और रखरखाव का काम तेजी से चल रहा है।

यूपी विधानसभा चुनाव के केंद्र में रहे कर्मचारी

पेंशन बहाली के लिए सपा के पक्ष में दिखा कर्मचारियों का मतदान!

» कर्मचारियों को लामबंद करने की दिखी कोशिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव संपन्न हो गए। 10 मार्च को नतीजे आ जाएंगे। पर कर्मचारी बेचैन हैं। उन्हें आशंका है कि जिस तरह उनके बड़े समूह ने सत्ताधारी दल के खिलाफ मोर्चा खोला है, अगर सपा न जीती और भाजपा फिर सत्ता में आई तो क्या होगा? क्या वह मुखर विरोध करने वालों के खिलाफ विरोधी वाला रवैया अपनाएगी? या कर्मचारियों से जुड़े मुद्दों के समाधान का कोई रास्ता निकालेगी।

कर्मचारियों का कहना है कि जो भी सरकार सत्ता में आए, उसे कर्मचारियों के मुद्दों का प्रमुखता से समाधान करना चाहिए। प्रदेश में करीब 21 लाख कर्मचारी हैं। इनमें करीब 16 लाख नियमित हैं और करीब 5 लाख आउट सोर्सिंग पर नियुक्त हैं। पुरानी पेंशन बहाली का मुद्दा लंबे समय से कर्मचारियों के एजेंडे में रहा है। 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले भी कर्मचारियों ने इसे बड़े स्तर पर उठाया था। पर, तत्कालीन मुख्य सचिव अनूप चंद्र पांडेय ने केंद्र की तरह नई पेंशन में सरकार का अंशदान बढ़ाकर 10 से 14 प्रतिशत करवा दिया था। नई पेंशन में सरकार के हिस्से का करीब 10 हजार करोड़ रुपये जो पिछली सरकारों ने जमा नहीं कराया था, उसे सरकारी खजाने से जमा करवा दिया। साथ ही कर्मचारियों की नई पेंशन से जुड़ी आशंकाओं व अन्य मुद्दों पर विचार कर तार्किक समाधान का सुझाव देने के लिए एक उच्चस्तरीय समिति का गठन कर किया था। सपा ने मौके की नजाकत को समझा और पुरानी पेंशन बहाली का वादा अपने घोषणापत्र में शामिल कर कर्मचारियों को लामबंद करने की कोशिश की। नतीजा ये हुआ कि, विधानसभा चुनाव आते-आते कर्मचारी पुरानी पेंशन बहाली को लेकर भाजपा सरकार के खिलाफ लामबंद हो गए। मतदान के दौरान मिले फीडबैक के मुताबिक बड़ी संख्या में नई पेंशन वाले व भाजपा विरोधी मानसिकता वाले कर्मचारियों ने सपा के पक्ष में मतदान किया। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के महामंत्री अतुल मिश्रा का कहना है कि विधानसभा चुनाव में कर्मचारियों ने अपने मुद्दे को प्रमुखता से उठाया है।

बीजेपी सरकार ने राष्ट्रपति पद का लालच दिया: मलिक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने मोदी सरकार पर बड़ा हमला किया है। मलिक ने पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी सरकार ने उन्हें राष्ट्रपति पद का लालच दिया और कहा कि चुप रहोंगे तो राष्ट्रपति बना दिए जाओगे। मलिक ने केंद्र सरकार पर तीन कृषि कानूनों को निरस्त करने के बाद किसानों से किए गए वादों को पूरा नहीं करने का भी आरोप लगाया है।

» किसानों और सरकार के बीच चल रही लड़ाई

उन्होंने कहा राज्यपाल के रूप में मेरा कार्यकाल अगले छह से सात महीनों में खत्म हो जाएगा। उसके बाद मैं उत्तर भारत के सभी किसानों को एकजुट करने के लिए एक आउटरिच अभियान शुरू करूंगा। भारतीय जनता पार्टी के नेता रहे मलिक कृषि सुधारों के आलोचक रहे हैं, मलिक ने सरकार पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि हमने 700 से ज्यादा किसानों को खो दिया। लेकिन एक कुतिया की मौत पर लैटर लिखने वाले प्रधानमंत्री ने उन किसानों की मौत पर एक शब्द तक नहीं बोला। केंद्र सरकार एमयसपी पर कानूनी गारंटी देने में विफल रही है। क्योंकि प्रधानमंत्री के मित्र, जिन्होंने तीन कृषि कानून लाए जाने से पहले पानीपत में गोदाम का निर्माण किया था। वो कम कीमत पर गेहूं खरीदना और ऊंची कीमतों पर बेचना चाहते हैं, यह किसानों और सरकार के बीच की लड़ाई है।

भाजपा कंट्रोल रूम से करेगी मतगणना स्थल की निगरानी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मतगणना वाले दिन दस मार्च को भाजपा प्रदेश मुख्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम से प्रत्येक विधानसभा की मतगणना पर नजर रखी जाएगी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह खुद कंट्रोल रूम की कमान संभालेंगे।

मतगणना के लिए हर जिले के समन्वयक का वर्चुअल प्रशिक्षण किया जाएगा। जिला समन्वयक जिले के मतगणना एजेंटों को प्रशिक्षण देंगे। पार्टी ने सभी प्रत्याशियों और जिलाध्यक्षों को मतगणना एजेंट नियुक्त कर उनका प्रशिक्षण कराने की जिम्मेदारी दी है। मतगणना एजेंट को पोस्टल बैलेट की मतगणना पर गंभीरता से नजर रखने, ईवीएम के मतों की गणना रखने सहित अन्य बारीकियां समझाई जाएंगी। मतगणना के लिए जिला कार्यालयों में भी कंट्रोल रूम बनाया जाएगा। जिलाध्यक्ष मतगणना के दौरान वहां मौजूद रहेंगे। परेशानी आने पर तत्काल मुख्यालय को सूचित किया जाएगा।

मेरा परिवार राजी होगा तो ही राजनीति में आऊंगा: रॉबर्ट वाड्रा

» बीजेपी से मुकाबला ही एकमात्र रास्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। यूपी समेत पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के रिजल्ट आने से पहले कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा ने एक बार फिर से राजनीति में आने के संकेत दिए हैं। उन्होंने कहा कि मैं सोचता हूं कि यदि राजनीति में आता हूं तो फिर लोगों की बड़े पैमाने पर मदद कर पाऊंगा।

रॉबर्ट वाड्रा ने कहा यदि मैं लोगों के लिए काम करता हूं, जो कि 10 साल से कर रहा हूं तो फिर उनका आशीर्वाद मुझे मिलता है। दृष्टिहीन बच्चों और बुजुर्गों का आशीर्वाद मेरी ताकत बनता है। मैं सोचता हूं कि उनके लिए काफी कम करता हूं, जितना वे मेरे लिए करते हैं। वाड्रा ने कहा कि समाज की सेवा के लिए मुझे राजनीति में आने की जरूरत नहीं है। इस बारे में परिवार से मंजूरी मिलने के बाद ही कोई फैसला लूंगा। बीकानेर लैंड डील और फरीदाबाद में जमीन घोटाले के आरोपों का सामना कर रहे रॉबर्ट वाड्रा का कहना है कि उनके खिलाफ गलत आरोप लगाए गए हैं। भाजपा पर आरोप लगाते हुए वाड्रा ने कहा हर मसले में वे मेरा नाम घसीट लाते हैं और गलत आरोप लगाते हैं। इसलिए सोचता हूं कि इनसे लड़ने का एकमात्र तरीका यह है कि संसद में जाऊं, जिसके लिए चुनाव लड़ना होगा।

उन्होंने कहा कि फिलहाल परिवार के साथ इस फैसले को लेकर बातचीत चल रही है। गांधी परिवार के दामाद ने कहा कि यदि परिवार इस पर राजी होता है और लोग समझते हैं कि मैं उनके लिए कुछ कर सकता हूं तो फिर मैं राजनीति में कूदने पर विचार करूंगा। वाड्रा ने ऐसे समय में राजनीति में कदम रखने की इच्छा जाहिर की है, जब कांग्रेस और गांधी परिवार चुनावी राजनीति में पिछड़ते दिख रहे हैं।

रिजर्व ईवीएम का रिकॉर्ड नहीं देने की शिकायत

» प्रदेश अध्यक्ष ने मुख्य चुनाव आयुक्त को लिखा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने मुख्य चुनाव आयुक्त को पत्र भेजकर मतदान के दौरान ईवीएम में कई तरह की खामियां होने का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि फतेहपुर में सभी क्षेत्रों में मतदान के बाद बची रिजर्व और अतिरिक्त ईवीएम व वीवीपैट मशीनों का रिकॉर्ड नहीं दिया जा रहा है।

शेष ईवीएम वीवीपैट मशीनें किसी स्ट्रांग रूम में राजीतिक दलों व प्रत्याशियों के सामने सील भी नहीं की गई। इससे दुरुपयोग की आशंका है। इसी तरह बस्ती में स्ट्रांग रूम के पास प्रत्याशियों के नाम की पर्चियां फेंके व जलाए जाने, फॉर्म 17 ग की प्रतियां फेंके जाने और ईवीएम के सील टैग बड़ी संख्या में फेंके व जलाए जाने की शिकायत मिली है। स्ट्रांग रूम के आगे व पीछे बड़ी संख्या में झाड़ियां है, इससे वहां गड़बड़ी की आशंका है। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा सीतापुर व मुजफ्फरनगर सहित कई जिलों में कार्यरत पुलिस कर्मियों से मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड व हस्ताक्षर युक्त फोटो जमा कराए जाने और उसके आधार पर उनके पोस्टल मतों का दुरुपयोग किए जाने की आशंका है।

प्रियंका के नेतृत्व में महिला मार्च

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस जाति-धर्म के समीकरणों के बजाय महिलाओं को अपने वोट बैंक बनाने का प्रयास करेगी। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तरफ से आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'लड़की हूं-लड़ सकती हूं' महिला मार्च का आयोजन किया। इस मार्च का नेतृत्व पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने किया।

अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष नेट्टा डिसूजा ने कहा कि लड़की हूं-लड़ सकती हूं अभियान कांग्रेस के लिए आंदोलन है। यह सिर्फ चुनावी नारा नहीं है, बल्कि देश-प्रदेश में महिलाओं को सामाजिक-आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए शुरू किया गया आंदोलन है। इसका उद्देश्य भारतीय राजनीति में महिलाओं और उनकी आकांक्षाओं को मुख्यधारा में लाना है।

इस विधानसभा चुनाव में भी पार्टी की ओर से 159 महिला उम्मीदवारों को पार्टी ने चुनाव लड़ने का मौका दिया गया और आगे भी दिया जाएगा।

फोटो: 4पीएम

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर राजधानी लखनऊ में बीकेटी के प्राथमिक विद्यालय मुरलीपुरा में शिक्षिका शोभना श्रीवास्तव के नेतृत्व में स्कूल में माताओं का सम्मान किया गया। वहीं रंगोली बनाकर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश दिया गया।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।